P: ISSN NO.: 2394-0344 RNI No.UPBIL/2016/67980 VOL-3* ISSUE-5* (Part-1) August- 2018
E: ISSN NO.: 2455-0817 *Remarking An Analisation*

महाभारत का पुरातात्त्विक प्रमाण–एक अध्ययन

सारांश

महाभारत भारतीय साहित्य का ही नहीं, विश्व साहित्य का एक अद्‌भुत ग्रन्थ है। आकार की विशालता, विषयों की व्यापकता, लोकप्रियता आदि की दृष्टि से यह विश्व साहित्य में अद्वितीय है। एक लाख श्लोकों की संख्या के कारण यह 'शतसाहस्त्री संहिता' के नाम से प्रसिद्ध है। आकार की विशालता और विषयों के महत्त्व दोनों ने इसे 'महाभारत' का नाम दिया। महाभारत के समय को लेकर विद्वानों में एकमतता नहीं है, फिर भी कुछ पुरातात्विक साक्ष्यों के आधार पर महाभारत काल की ऐतिहासिकता को नकारा नहीं जा सकता। इसमें कोई सन्देह नहीं है कि पुरातत्त्व विभाग इतिहास की सर्वाधिक ठोस सामग्री प्रस्तुत करता है, किन्तु पुरातत्त्व विभाग की अपनी कुछ सीमाएँ भी हैं। यदि वह परम्परा से सर्वथा हटकर चले तो लंगड़ा कहलाएगा। मात्र पुरात्तात्विक आधार पर सांस्कृतिक साहित्यिक परम्परा को नकारना भूल होगी। लेकिन इतना जरूर है कि विद्वानों में महाभारत–युद्ध की तिथियों को लेकर विविधता पायी जाती है। फिर भी भारतीय गणितज्ञ एवं खगोलज्ञ आर्यभट्ट जैसे विद्वानों ने महाभारत युद्ध 3102 ई.पू. में घटित हुआ प्रामाणिक माना है।

जगदीश प्रसाद मीणा
असिस्टेन्ट प्रोफेसर,
चित्रकला विभाग,
राजस्थान विश्वविद्यालय,
जयपुर, राजस्थान

मुख्य शब्द : महाभारत, पुरातत्त्व, साक्ष्य, मृदभाण्ड, शिलालेख, वैदिक साहित्य, पाषाण–खण्ड, लौह–शिल्प, पात्र, प्रामाणिक।

प्रस्तावना

महाभारत के सुप्रसिद्ध समीक्षक डॉ. वासुदेव शरण अग्रवाल ने भी इसकी विशालता को स्वीकार करते हुए लिखा है– ''इसकी तुलना में यूनान इलियड़ और औडेसी अथवा आइसलैंड और स्केंडेनेविया के प्राचीन एड्डा और सामा पीछे छूट जाते हैं। इसी तरह मैकडोनल का मत है कि इस रूप में महाभारत ग्रीक के 'इलियड' और 'ओडिसी' दोनों काव्यों को मिलाकर आकार में उनके आठ गुने के बराबर है। इस प्रकार 'महाभारत' संसार का सबसे बड़ा काव्य है। संसार के साहित्य के इतिहास में कोई भी ऐसा काव्य नहीं है, जो आकार की विशालता में इसके निकट भी पहुँच सके।[1]

महाभारत मात्र महाकाव्य ही नहीं अपितु इतिहास, धर्म, दर्शन, नीति, राजनीति आदि अनेक विषयों का विश्वकोष है। स्वयं वेदव्यास जी ने तो इस ग्रन्थ की प्रशंसा में यहाँ तक कहा है कि– ''धर्म, अर्थ, काम के संदर्भ में जो इस ग्रन्थ में उपलब्ध है वह ही अन्यत्र भी है और जो इस ग्रन्थ में नहीं है वह अन्यत्र कहीं नहीं है।''

अतः महाभारत आर्य संस्कृति तथा भारतीय सनातन धर्म का एक महान ग्रन्थ तो है ही साथ में श्रेष्ठ एवं प्रामाणिक ग्रन्थ भी है और अमूल्य रत्नागार है, महामात्य है, उपजीव्य ग्रन्थ है, गूढ़ार्थमय ज्ञान–विज्ञान का शास्त्र है, धर्मग्रन्थ है, राजनैतिक उपदेशों का कोष है, भक्तिशास्त्र है, दार्शनिक विवेचन हेतु चिन्तन का विषय है एवं अनेकानेक इतिहासों का एकमात्र इतिहास है।[2]

महाभारत के समय को लेकर विद्वानों में एकमतता नहीं है, फिर भी कुछ पुरातात्विक साक्ष्यों के आधार पर महाभारत काल की ऐतिहासिकता को नकारा नहीं जा सकता। डॉ. सरकार के अनुसार महाभारत युद्ध को ई.पू. द्वितीय अथवा तृतीय सहस्त्राब्दी में नहीं रखा जा सकता, जैसी कि परम्परागत मान्यता है। उनका तर्क है कि इस कालक्रम की संगति हडप्पा संस्कृति एवं ईस्वी पूर्व द्वितीय सहस्त्राब्दी के मध्य में आर्यों के भारत–आगमन के विषय में उपन्यस्त सुप्रतिष्ठित मतों से स्थापित नहीं की जा सकती। अपने पक्ष के समर्थन में उन्होंने वैदिक साहित्य में महाभारत के अनुल्लेख एवं पुराणों के कालक्रम की अविश्वसनीयता इत्यादि का भी उल्लेख किया है।

डॉ. साकलियाँ का कथन है कि जिन लोहे के अस्त्रों का उल्लेख महाभारत में है वे ई.पू. छठवी शताब्दी के पूर्व तक उपयोग में नहीं आए थे एवं ई.पू. 1100 से पहले तो वे पूर्णतः अज्ञात थे। उनके अनुसार द्वितीय तथा तृतीय

सहस्त्राब्दी के औजार अत्यन्त सादे किस्म के थे। यदि महाभारत युद्ध ई.पू. द्वितीय सहस्त्राब्दी में हुआ माना जाए तो यह मानना पड़ेगा कि यह महायुद्ध लघु पाषाण–खण्डों, तीरों और पत्थर की गुलेलों इत्यादि की सहायता से लड़ा गया था। इन दोनों विद्वानों की उपर्युक्त मान्यताएँ अद्यावत पुरातात्विक उत्खननों से प्राप्त निष्कर्षों पर आधारित है। इसमें सन्देह नहीं कि पुरातत्त्व इतिहास की सर्वाधिक ठोस सामग्री प्रस्तुत करता है, किन्तु पुरातत्त्व की अपनी कुछ सीमाएँ भी हैं। यदि वह परम्परा से सर्वथा हटकर चले तो लंगड़ा कहलाएगा। मात्र पुरात्तात्विक आधार पर सांस्कृतिक साहित्यिक परम्परा को नकारना भूल होगी।[3]

के. एस. रामचन्द्रन व एस. पी. गुप्ता ने 41 विद्वानों द्वारा प्रस्तुत किए गए अलग–अलग विचारों के आधार पर निष्कर्ष निकाला है। इनका मानना है कि महाभारत लौह–युग की रचना है। पुरातात्विक आधार पर इससे उपकरण व औजार बनाने की तकनीक का प्रचलन भारत में एक हजार ई.पू. के आसपास हुआ। इस प्रमाणिक साक्ष्य के आधार पर महाभारत युद्ध 1200–1000 ई.पू. से पहले नहीं रखा जा सकता। मृदभाण्ड निर्माण तकनीक एवं भगवानपुरा के उत्खनन से प्राप्त गृहनिर्माण कला के आधार पर यह निष्कर्ष निकलता है कि चित्रित धूसर मृदभाण्ड परम्परा के लोगों का सामाजिक एवं आर्थिक ढांचा उतना पिछड़ा हुआ नहीं था, जितनी की कल्पना की जाती है।[4]

जहाँ तक लोहे के प्रयोग का प्रश्न है वैदिक साहित्य में विविध लौह–शिल्पों का उल्लेख है। ईसा से हजारों वर्ष पूर्व रचित ऋग्वेद (1/112/10) में इस घटना का स्पष्ट उल्लेख है कि विश्पला नामक स्त्री का एक पैर किसी स्पर्धा में नष्ट हो गया था। अश्विनीकुमारों ने उसे एक लोहे का (आयसी) पैर प्रदान किया था। पिशल का विचार है कि यहाँ एक ऐसे दौड़ने वाले अश्व से तात्पर्य है जिसके टूटे हुए एक पैर का अश्विनों ने अद्भुत उपचार किया था। इस संदर्भ से इतना तो स्पष्ट ही है कि ऋग्वेदकाल में लौह–शिल्प ने आश्चर्यजनक उन्नति कर ली थी। महाभारत काल में लौह–शिल्प को अज्ञात मानने वालों को ऋग्वेद का काल 600 ई.पू. मानना होगा जबकि 625 ई. गौतम बुद्ध का जन्मवर्ष है।

वैदिक साहित्य में महाभारतीय पात्रों के उल्लेख का प्रश्न है। ऋग्वेद को छोड़कर परवर्ती संहिताओं में महाभारतीय पात्रों का स्पष्ट उल्लेख मिलता है। यजुर्वेद में धृतराष्ट्र तथा विचित्रवीर्य का, उपनिषदों में विशेषतः छान्दोग्य उपनिषद् में देवकीपुत्र (कृष्ण) का, पाणिनी की अष्टाध्यायी में युधिष्ठिर, वासुदेव कृष्ण तथा अर्जुन का उल्लेख हुआ है। ईसा से लगभग पाँच सौ वर्ष पूर्व हुए आश्वलायन के गृह्य सूत्र में भारत तथा महाभारत का ही नहीं अपितु व्यास की शिष्य परम्परा का भी उल्लेख मिलता है।[5]

महाराज पुलकेशिन द्वारा विसर्जित 'एहोल शिलालेख' के विवरण में अंकित श्लोक का डॉ. कीलहार्न ने मूल पाठ में अधिक फेरबदल नहीं किया है। सीधे–सादे अर्थ का प्रस्ताव किया है–

त्रिंशत्सु त्रिसहस्त्रेषु भारतादाहवादितः
सप्ताब्द–शतयुक्तेषु गतेष्वब्देषु पंचसु।।
पंचाशत्सु कलौ काले षट्सु पंचशतासु च
समासु समतीतासु शकानामपि भूजुजाभ्।।
(भारतीय अभिलेख)

त्रिंशत्सु– 30 + त्रिसहस्त्रेषु– 3000 + सप्ताब्दशतयुक्तेषु– 700 + अब्देषु पंचसु– 5

''अर्थात् भारत–संग्राम से 30+3000+700+5 = 3735 वर्ष बीतने पर, पंचाशत्सु–50+षट्सु–6+पंचशतेषु–500 = 556 वर्ष पश्चात्.....।'' वास्तव में भारत–संग्राम से 3735वें तथा शक्त संवत के 556वें वर्ष में शिलालेख उत्कीर्ण हुआ। शक संवत् ईसवी 78 से चला.... यह एक पक्ष है। अतः गणना करने पर 556+78 = 634 ईस्वी सन् फलीभूत हुआ। इससे पहले अर्थात् 3735–634 = 3101 ईसवी पू. में महाभारत संग्राम का अस्तित्व अनेक विद्वानों ने स्वीकार किया है।[6]

एक प्राचीन मान्यता के अनुसार महाभारत का युद्ध द्वापर और कलियुग की सन्धि (3102 ई.पू.) में हुआ था। महाभारताचार्य चिन्तामणि विनायक वैद्य ने इसी कालमर्यादा की पुष्टि की है। प्राध्यापक कवीश्वर ने अनेक सुदृढ़ ज्योतिष–प्रमाणों के आधार पर इस तिथि–क्रम की पुष्टि की है। इसी तरह चालुक्य नृपति द्वितीय पुलकेशी की 'ऐहोल प्रशस्ति' (634 ई.) में भी इसी तरह का उल्लेख मिलता है, जो हम पहले ही समझ चुके हैं। जब तक ठोस एवं पूर्ण पुरातात्विक साक्ष्य इसके विपक्ष में न मिल जाएँ तब तक इस परम्परा को अस्वीकार करने का कोई कारण (प्रमाण) प्रतीत नहीं होता। महाभारतकालीन अनेक स्थलों की खुदाई अभी हुई नहीं है। कुछ ही स्थलों के उत्खननों द्वारा प्रस्तुत प्रमाणों के आधार महाभारत युद्ध अथवा महाभारतकालीन सभ्यता के ऐतिहासिकता को चुनौती देने के प्रयास, जन–विश्वास अथवा लोगों की सांस्कृतिक भावना को न प्रभावित कर पायें और न ही कर सकते हैं।[7]

प्राचीन वैदिक सरस्वती नदी का 'महाभारत' में कई बार वर्णन आया है। बलराज जी द्वारा इसके तट के समान्तर प्लादा पेड़ (प्लक्षप्रस्त्रवण, यमुनोत्री के पास) से प्रभास क्षेत्र (वर्तमान कच्छ का रण) तक तीर्थयात्रा का वर्णन भी महाभारत में आता है। कई भू–विज्ञानी मानते हैं कि वर्तमान सूखी हुई घग्गर–हकरा नदी ही प्राचीन वैदिक सरस्वती नदी थी, जो 5000–3000 ई.पू. पूरे प्रवाह से बहती थी और लगभग 1900 ई.पू. में भूगर्भी परिवर्तनों के कारण सूख गयी थी। ऋग्वेद में वर्णित प्राचीन वैदिक काल में सरस्वती नदी को नदीतमा की उपाधि दी गई थी। उनकी सभ्यता में सरस्वती नदी ही सबसे बड़ी और मुख्य नदी थी, गंगा नहीं।

भूगर्भी परिवर्तनों के कारण सरस्वती नदी का पानी यमुना में चला गया, गंगा–यमुना संगम को 'त्रिवेणी' (गंगा, यमुना, सरस्वती) संगम मानते हैं। इस घटना को बाद के वैदिक साहित्यों में वर्णित हस्तिनापुर के गंगा द्वारा बहाकर ले जाने से भी जोड़ा जाता है क्योंकि पुराणों में आता है कि परीक्षित की 28 पीढ़ियों के बाद गंगा में बाढ़ आ जाने के कारण सम्पूर्ण हस्तिनापुर पानी में बह गया और बाद की पीढ़ियों ने कौशाम्बी को अपनी राजधानी

बनाया। महाभारत में सरस्वती नदी के विनाश्न नामक तीर्थ पर सूखने का संदर्भ आता है। जिसके अनुसार म्लेच्छों से द्वेष होने के कारण सरस्वती नदी ने मलेच्छ (सिन्ध के पास के) प्रदेशों में जाना बंद कर दिया था।

भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण विभाग ने गुजरात के पश्चिमी तट पर समुद्र में डूबे 4000 से 3500 वर्ष पुराने शहर खोज निकाले हैं। इनको महाभारत में वर्णित 'द्वारका' नगर के संदर्भों से जोड़ा गया है। प्रो. एस. आर. राव ने कई तर्क देकर इस नगरी को 'द्वारका' सिद्ध किया है। यद्यपि अभी मतभेद जारी है क्योंकि गुजरात के पश्चिमी तट पर कई अन्य 7500 वर्ष पुराने शहर भी मिल चुके हैं।

निष्कर्ष

इस प्रकार से निम्न साक्ष्यों के आधार पर यह कहना गलत नहीं होगा कि 3000 ई.पू. के लगभग महाभारत का संग्राम अवश्य घटित हुआ था। लेकिन इतना जरूर है कि विद्वानों में महाभारत–युद्ध की तिथियों को लेकर विविधता पायी जाती है। फिर भी भारतीय गणितज्ञ एवं खगोलज्ञ आर्यभट्ट जैसे विद्वानों ने महाभारत युद्ध 3102 ई.पू. में घटित हुआ (प्रामाणिक) माना है।

सन्दर्भ ग्रंथ सूची

1. *तिवारी, शकुन्तला रानी – महाभारत में धर्म, पाटल प्रकाशन, आगरा, 1973, पृ. 33–35*
2. *शर्मा, कन्हैयालाल – महाभारत का आश्वमेधिक पर्व (धर्म और दर्शन), परिमल पब्लिकेशन्स, दिल्ली, 1990, पृ. 04*
3. *गुप्त, नत्थूलाल – महाभारतः एक समाजशास्त्रीय अनुशीलन, साहित्य प्रकाशन, दिल्ली, 1980, पृ. 19*
4. *पाण्डेय, अरूण प्रकाश – महाभारतकालीन संस्कृति के पुरातात्विक आयाम, कला प्रकाशन, वाराणसी, 2009, पृ. 32*
5. *गुप्त, नत्थूलाल – महाभारत : एक समाजशास्त्रीय अनुशीलन, साहित्य प्रकाशन, दिल्ली, 1980, पृ. 20*
6. *बाली, चन्द्रकान्त – भारतयुद्ध–कालमीमांसा, आत्माराम एंड संस, दिल्ली, 1993, पृ. 96–97*
7. *गुप्त, नत्थूलाल – महाभारत : एक समाजशास्त्रीय अनुशीलन, साहित्य प्रकाशन, दिल्ली, 1980, पृ. 19–20*